International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 09 Sep- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|

(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले में मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रजनन व्यवहार पर प्रभाव

[1]Rakhi Yadav, [2]Dr. Rajshree Mathpal,
[1] Research Scholar, (Sociology), Banasthali Vidyapith, Rajasthan, India
[2] Assistant Professor, Department of Sociology, Banasthali Vidyapith, Rajasthan, India
Email Id: rakhiy234@gmail.com, rajshrimathpal@gmail.com

Socio. Res. Paper-Accept. Dt. 14 June. 2024 **Pub** : Dt. 30 Sept. 2024

सारां”ा– यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले के ग्रामीण और शहरी मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार पर शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का विश्लेषण करता है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना था कि किस प्रकार शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य और निर्णयों को प्रभावित करती हैं। इस शोध में 300 महिलाओं का नमूना लिया गया, जिनमें से 150 ग्रामीण और 150 शहरी महिलाएं शामिल थीं। अध्ययन से प्राप्त परिणामों के अनुसार, उच्च शिक्षित महिलाओं में गर्भनिरोधक का उपयोग अधिक था और उनकी प्रजनन दर कम थी। इसके विपरीत, अशिक्षित महिलाओं में अधिक बच्चों की संख्या और कम स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच पाई गई। सामाजिक–आर्थिक स्थिति का भी महिलाओं के प्रजनन व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ा, जहां उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाली महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं तक अधिक पहुंच और बेहतर प्रजनन निर्णय लेने की क्षमता थी। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार करने से प्रजनन स्वास्थ्य में सुधार संभव है और यह समाज में बेहतर जीवन गुणवत्ता सुनिश्चित करने में सहायक हो सकता है।

भाब्द कुंजी– प्रजनन व्यवहार, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, परिवार नियोजन, गर्भनिरोधक, महिला स्वास्थ्य, प्रजनन दर, महिलाओं का सशक्तिकरण, सामाजिक दबाव आदि।

प्रस्तावना– प्रजनन स्वास्थ्य किसी भी समाज की समग्र स्वास्थ्य स्थिति और विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। इसमें न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक, सामाजिक, और आर्थिक पहलुओं का भी समावेश होता है। विशेष रूप से महिलाओं का प्रजनन स्वास्थ्य उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है, जैसे कि उनकी शिक्षा, सामाजिक स्थिति, और आर्थिक स्वतंत्रता।

इस शोध पत्र का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले की मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार पर शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना है।

मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार के संदर्भ में शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति की भूमिका को समझना अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन कारकों का उनके स्वास्थ्य निर्णयों, परिवार नियोजन, और बच्चों की संख्या पर गहरा प्रभाव पड़ता है। विशेष रूप से, भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में रहने वाली मुस्लिम महिलाओं के बीच शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति में काफी असमानता पाई जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति आमतौर पर शहरी महिलाओं की तुलना में निम्न होती है, जिससे उनके प्रजनन व्यवहार और स्वास्थ्य संबंधी निर्णयों में अंतर दिखाई देता है।

प्रजनन व्यवहार का अध्ययन यह बताता है कि महिलाओं के शैक्षिक स्तर और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर उनके परिवार नियोजन, गर्भावस्था, और बच्चों की संख्या जैसे मुद्दों पर फैसले किस प्रकार प्रभावित होते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में प्रजनन स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और स्वास्थ्य सेवाओं का अधिक उपयोग देखा जाता है, जबकि निम्न शैक्षिक और सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाली महिलाओं में जागरूकता की कमी और स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुंच पाई जाती है।

इस अध्ययन में फिरोजाबाद जिले की ग्रामीण और शहरी मुस्लिम महिलाओं के बीच प्रजनन व्यवहार में अंतर को भी उजागर किया जाएगा। यह शोध इस बात पर केंद्रित होगा कि शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति का महिलाओं के स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच, परिवार नियोजन के प्रति दृष्टिकोण, और प्रजनन स्वास्थ्य जागरूकता पर क्या प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन न केवल इन दोनों क्षेत्रों की महिलाओं के बीच के अंतर को समझने में मदद करेगा, बल्कि इससे नीति निर्माताओं और स्वास्थ्य सेवाओं के प्रबंधकों को बेहतर योजनाएं बनाने में भी सहायता मिलेगी ताकि महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य में सुधार किया जा सके।

शोध का उद्देश्य

मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार में शिक्षा की भूमिका का विश्लेषण।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर प्रजनन व्यवहार में अंतर का अध्ययन।

अनुसंधान कार्यप्रणाली

डेटा संग्रहण –इस शोध में उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले की ग्रामीण और शहरी मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार पर शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा। डेटा संग्रहण के लिए मिश्रित विधि का उपयोग किया जाएगा, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार की तकनीकों को शामिल किया जाएगा।

1. नमूना चयन

नमूना आकार–150 मुस्लिम महिलाएं (ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से 75–75)।

नमूना चयन की विधि – उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन, जिसमें उन महिलाओं को शामिल किया जाएगा जिनकी उम्र 18–45 वर्ष के बीच है और जिन्होंने कम से कम एक बार गर्भधारण किया है।

2. डेटा संग्रहण तकनीक

सर्वेक्षण–एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया जाएगा, जिसमें शिक्षा, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, परिवार नियोजन, और स्वास्थ्य सेवाओं के उपयोग से जुड़े सवाल शामिल होंगे।

यह प्रश्नावली महिलाओं से व्यक्तिगत रूप से पूछी जाएगी।

साक्षात्कार – गहराई से साक्षात्कार किए जाएंगे ताकि महिलाओं के व्यक्तिगत अनुभव, चुनौतियों और सामाजिक मान्यताओं को समझा जा सके।

3. डेटा संग्रहण उपकरण –

डिजिटल रिकॉर्डर और नोट्स का उपयोग साक्षात्कार के दौरान किया जाएगा।

प्रश्नावली और साक्षात्कार की प्रतिक्रियाओं को डेटा विश्लेषण के लिए संग्रहित किया जाएगा।

शिक्षा और प्रजनन व्यवहार

शिक्षा का महिलाओं के प्रजनन व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ता है। यह देखा गया है कि शिक्षा न केवल महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति जागरूक बनाती है, बल्कि उन्हें परिवार नियोजन और प्रजनन निर्णयों में स्वतंत्रता और सूचित निर्णय लेने की क्षमता भी प्रदान करती है। विभिन्न शोध

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 09 Sep- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि शिक्षा का स्तर जितना ऊंचा होता है, प्रजनन स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और गर्भनिरोधक के उपयोग में उतनी ही वृद्धि होती है।

शिक्षा का प्रजनन व्यवहार पर प्रभाव–

- **गर्भनिरोधक का उपयोग–** उच्च शिक्षित महिलाओं में गर्भनिरोधक विधियों का उपयोग अधिक होता है, जिससे वे अनियोजित गर्भधारण को नियंत्रित कर पाती हैं। वहीं, कम शिक्षित या अशिक्षित महिलाएं इस दिशा में कम जागरूक होती हैं, जिसके परिणामस्वरूप अनियोजित गर्भधारण और उच्च जन्म दर पाई जाती है।
- **विवाह की उम्र–** उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में देर से विवाह करने का चलन होता है, जिससे उनकी प्रजनन आयु कम हो जाती है। इसके विपरीत, कम शिक्षित महिलाओं में कम उम्र में विवाह होने की संभावना अधिक होती है, जिससे उनकी प्रजनन अवधि लंबी हो जाती है और बच्चे अधिक होते हैं।
- **बच्चों की संख्या–** शिक्षित महिलाओं में परिवार नियोजन का अधिक ध्यान रखा जाता है, जिससे बच्चों की संख्या सीमित होती है। जबकि अशिक्षित महिलाएं पारंपरिक मान्यताओं और सामाजिक दबावों के कारण अधिक बच्चे पैदा करती हैं।
- **स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच–** शिक्षित महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं, जैसे प्रसवपूर्व देखभाल, सुरक्षित प्रसव और पोस्टनाटल देखभाल का उपयोग अधिक देखा जाता है। वहीं, कम शिक्षित महिलाएं अक्सर इन सेवाओं से वंचित रहती हैं।

नमूना अध्ययन

फिरोजाबाद जिले में किए गए एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि ग्रामीण और शहरी मुस्लिम महिलाओं के बीच शिक्षा का स्तर और प्रजनन व्यवहार में महत्वपूर्ण अंतर है। नीचे दिए गए आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 09 Sep- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शिक्षा का स्तर	गर्भनिरोधक उपयोग (%)	विवाह की औसत उम्र	बच्चों की औसत संख्या	प्रसवपूर्व देखभाल उपयोग (%)
अशिक्षित	25%	17 वर्ष	4.5	35%
प्राथमिक शिक्षा	40%	18 वर्ष	3.8	50%
माध्यमिक शिक्षा	60%	20 वर्ष	2.5	75%
उच्च शिक्षा	80%	22 वर्ष	1.8	90%

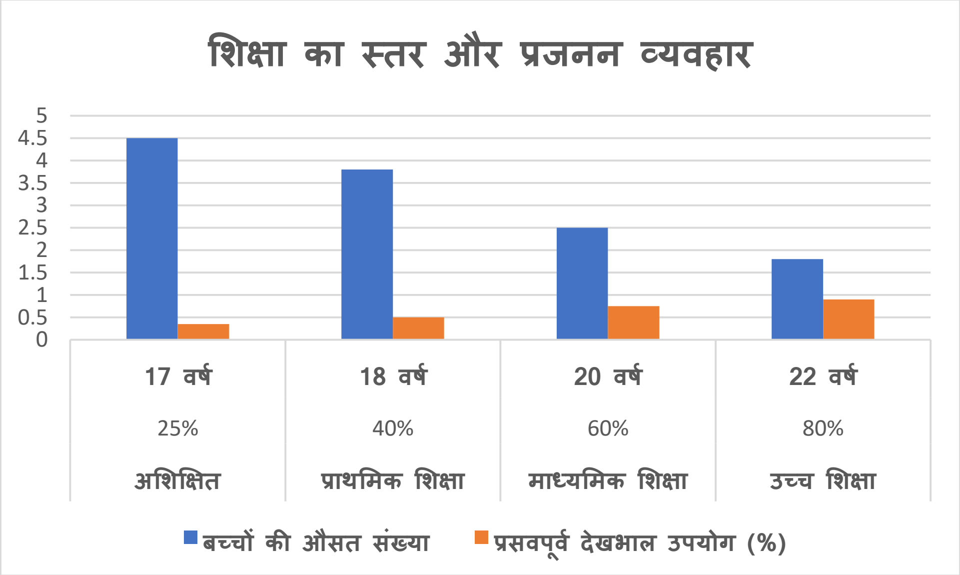

आंकड़ों का विश्लेषण

ऊपर दिए गए तालिका के अनुसार, शिक्षा के स्तर में वृद्धि के साथ गर्भनिरोधक उपयोग और प्रसवपूर्व देखभाल का प्रतिशत भी बढ़ता है। उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में गर्भनिरोधक का उपयोग 80% तक पहुंच गया है, जबकि अशिक्षित महिलाओं में यह केवल 25% है। इसी प्रकार, बच्चों की औसत संख्या उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाओं में कम (1.8) है, जबकि अशिक्षित महिलाओं में अधिक (4.5) है। यह आंकड़े स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि शिक्षा का महिलाओं के प्रजनन व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 09 Sep- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
RESEARCHERID THOMSON REUTERS
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सामाजिक–आर्थिक स्थिति और प्रजनन व्यवहार

सामाजिक–आर्थिक स्थिति का महिलाओं के प्रजनन व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। एक महिला की आर्थिक स्थिति, जीवन स्तर, रोजगार, और परिवार की आय उसकी स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच और परिवार नियोजन के निर्णयों को प्रभावित करती है। बेहतर सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाले परिवारों की महिलाएं अपने स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक होती हैं, उन्हें स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुंच मिलती है, और वे परिवार नियोजन को प्रभावी रूप से लागू कर पाती हैं। इसके विपरीत, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर पर रहने वाली महिलाएं अक्सर स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित रहती हैं और पारंपरिक मान्यताओं से बंधी होती हैं, जिससे उनके प्रजनन व्यवहार में अंतर देखने को मिलता है।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रजनन व्यवहार पर प्रभाव–

स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच– उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाली महिलाएं बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं, प्रसवपूर्व देखभाल, और सुरक्षित प्रसव का अधिक उपयोग करती हैं। इसके विपरीत, निम्न वर्ग की महिलाएं अक्सर वित्तीय कठिनाइयों के कारण इन सेवाओं का उपयोग नहीं कर पातीं।

गर्भनिरोधक का उपयोग– उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाली महिलाएं गर्भनिरोधक विधियों का उपयोग अधिक करती हैं क्योंकि वे स्वास्थ्य सेवाओं और जागरूकता कार्यक्रमों तक आसानी से पहुंच रखती हैं। गरीब महिलाओं में गर्भनिरोधक का उपयोग कम देखा जाता है, जिससे अनियोजित गर्भधारण की संभावना अधिक होती है।

बच्चों की संख्या– उच्च आय वर्ग की महिलाएं छोटे परिवार रखने की प्रवृत्ति रखती हैं, जबकि निम्न आय वर्ग की महिलाओं में बच्चों की संख्या अधिक होती है। इसका मुख्य कारण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के साथ पारिवारिक दबाव भी है।

विवाह की उम्र– उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाली महिलाएं देर से विवाह करती हैं, जबकि गरीब परिवारों में जल्दी विवाह का प्रचलन अधिक होता है, जिससे उनके प्रजनन जीवन की अवधि लंबी हो जाती है।

नमूना अध्ययन

फिरोजाबाद जिले में किए गए एक सर्वेक्षण के आधार पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति और प्रजनन व्यवहार के बीच संबंध स्पष्ट किया गया है–

सामाजिक-आर्थिक स्थिति	गर्भनिरोधक उपयोग (%)	विवाह की औसत उम्र	बच्चों की औसत संख्या	प्रसवपूर्व देखभाल उपयोग (%)
निम्न वर्ग	30%	17 वर्ष	4.2	40%
मध्यम वर्ग	55%	19 वर्ष	3.2	65%
उच्च वर्ग	80%	21 वर्ष	2.0	90%

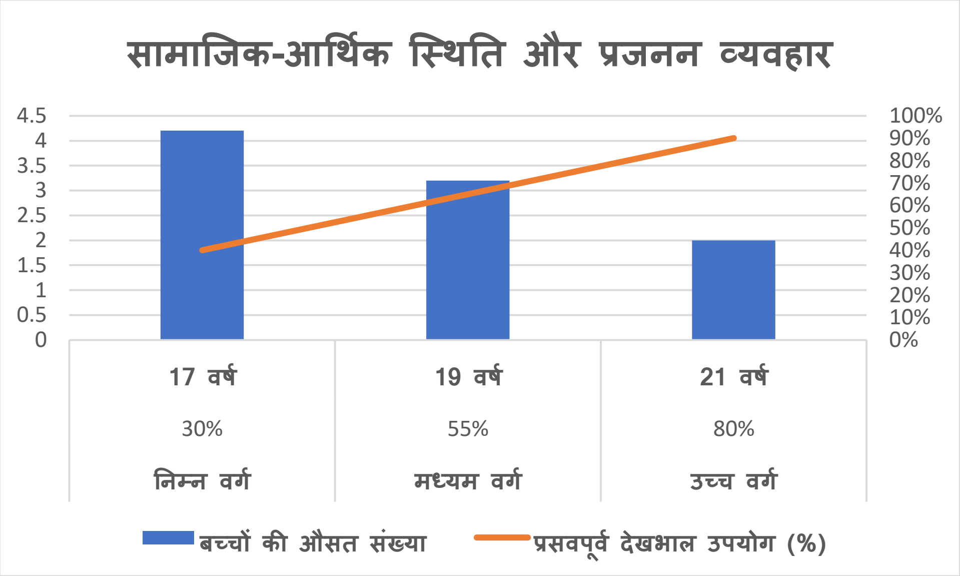

आंकड़ों का विश्लेषण

ऊपर दी गई तालिका से स्पष्ट होता है कि उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाली महिलाओं में गर्भनिरोधक का उपयोग अधिक (80%) है, जबकि निम्न वर्ग की महिलाओं में यह केवल 30% है। बच्चों की औसत संख्या भी उच्च वर्ग में कम (2.0) है, जबकि निम्न वर्ग में यह अधिक (4.2) है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति महिलाओं के प्रजनन व्यवहार को गहराई से प्रभावित करती है। उच्च वर्ग की महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुंच और गर्भनिरोधक विधियों का अधिक उपयोग होता है, जबकि निम्न वर्ग की महिलाएं आर्थिक और सामाजिक बाधाओं के कारण अपने प्रजनन जीवन को प्रभावी ढंग से प्रबंधित नहीं कर पातीं।

परिणाम और चर्चा

इस शोध में उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले की ग्रामीण और शहरी मुस्लिम महिलाओं के प्रजनन व्यवहार पर शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति के प्रभाव का विश्लेषण किया गया। अध्ययन के परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति महिलाओं के प्रजनन व्यवहार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं।

परिणाम

शिक्षा का प्रभाव– उच्च शिक्षित महिलाओं में गर्भनिरोधक विधियों के उपयोग का प्रतिशत अधिक पाया गया, और उनके बच्चों की औसत संख्या कम थी। इसके विपरीत, अशिक्षित या कम शिक्षित महिलाओं में परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता की कमी देखी गई और उनकी प्रजनन दर अधिक रही।

सामाजिक–आर्थिक स्थिति का प्रभाव– उच्च सामाजिक–आर्थिक वर्ग की महिलाओं में स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुंच और गर्भनिरोधक उपयोग अधिक देखा गया, जबकि निम्न वर्ग की महिलाएं इन सेवाओं से वंचित रही। उच्च वर्ग की महिलाएं देर से विवाह करती हैं और बच्चों की संख्या कम रखती हैं, जबकि निम्न वर्ग की महिलाएं जल्दी विवाह करती हैं और उनके अधिक बच्चे होते हैं।

चर्चा–

शोध से यह स्पष्ट हुआ कि शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति प्रजनन व्यवहार के प्रमुख निर्धारक हैं। बेहतर शिक्षा और आर्थिक स्थिति महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच और परिवार नियोजन के बारे में जागरूकता प्रदान करती है, जिससे वे अपने प्रजनन जीवन को बेहतर तरीके से नियंत्रित कर पाती हैं। इसके विपरीत, अशिक्षा और निम्न आर्थिक स्थिति के कारण महिलाएं पारंपरिक मान्यताओं और सामाजिक दबावों के कारण अधिक बच्चे पैदा करती हैं और स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित रहती हैं।

निष्कर्ष– इस अध्ययन से स्पष्ट रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति का महिलाओं के प्रजनन व्यवहार पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। उच्च शिक्षित और बेहतर आर्थिक स्थिति वाली महिलाएं अपने प्रजनन जीवन को अधिक सूचित और

नियंत्रित तरीके से प्रबंधित करती हैं। वे परिवार नियोजन विधियों का अधिक उपयोग करती हैं, प्रसवपूर्व देखभाल सेवाओं तक उनकी बेहतर पहुंच होती है, और उनकी प्रजनन दर कम होती है। इसके विपरीत, अशिक्षित या कम शिक्षित और निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति वाली महिलाएं पारंपरिक मान्यताओं और सीमित संसाधनों के कारण स्वास्थ्य सेवाओं और परिवार नियोजन से वंचित रहती हैं। इससे उनकी प्रजनन दर अधिक होती है और वे स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों का सामना करती हैं। इस अध्ययन के निष्कर्ष यह सुझाव देते हैं कि महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार करने से उनके प्रजनन स्वास्थ्य और जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। इसलिए, महिलाओं के लिए शिक्षा के अवसरों को बढ़ाने और स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को सुनिश्चित करने पर जोर दिया जाना चाहिए। यह नीतिगत सुधार प्रजनन दर को नियंत्रित करने और महिलाओं के समग्र विकास में सहायक हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1 हुसैन, एम., खान, एम., और खान, एफ. ए. (2018)। भारत में मुस्लिम महिलाओं की शैक्षिक स्थिति– मुद्दे और चुनौतियाँ। एसजेएएचएसएस, 6(2), 1–6।

2 कमला, आर., और राममल, एच. (2013). इस्लामिक बैंकों द्वारा सामाजिक रिपोर्टिंग– क्या सामाजिक न्याय मायने रखता है? अकाउंटिंग, ऑडिटिंग और अकाउंटेबिलिटी जर्नल, 26(6), 911/945.

3 हुसैन, एम. (2011). धर्म का समाजशास्त्र– प्रकृति और दायरा। इस्लामिक इनसाइट्स, 11, 157.

4 अंसारी, आई. ए. (1998). स्वतंत्र भारत में मुसलमान– उनकी प्रोफ़ाइल और समस्याएँ। इंस्टीट्यूट ऑफ़ ऑब्जेक्टिव स्टडीज़।

5 दास, एस. के. (2012). जनजातीय क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण में बाधाओं का विश्लेषण– असम से साक्ष्य। एशियन जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज, 2(4), 61–74.

6 इंजीनियर, ए. ए. (2001). मुसलमान और शिक्षा। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 36, 3221–3221.

7 घुमन, एस. जे. (2003). महिलाओं की स्वायत्तता और बाल अस्तित्व– चार एशियाई देशों में मुसलमानों और गैर–मुसलमानों की तुलना। जनसांख्यिकी, 40(3), 419–436.

8 गुप्ता, के., और येसुदियन, पी. पी. (2006). भारत में महिला सशक्तिकरण का साक्ष्य– सामाजिक–स्थानिक असमानताओं का एक अध्ययन। जियोजर्नल, 65 (4), 365–380.

9 हसन, जेड., और मेनन, आर. (2004). असमान नागरिक. भारत में मुस्लिम महिलाओं का एक अध्ययन, "ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली.

10 जीजीभॉय, एस. (2000), ग्रामीण भारत में महिलाओं की स्वायत्तता– इसके आयाम, निर्धारक और संदर्भ पर प्रभाव, एच.बी. प्रेसर और गीता सेन (संपादक) महिलाएँ और जनसांख्यिकी प्रक्रियाएँ– काहिरा से आगे बढ़ना (न्यूयॉर्क– ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस), पृष्ठ 204–238.

11 कबीर, एन. (1999). संसाधन, एजेंसी, उपलब्धियाँ– महिला सशक्तिकरण के मापन पर विचार. विकास और परिवर्तन, 30(3), 435–464.

12 कबीर, एन. (2005). लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण– तीसरी सहस्राब्दी विकास लक्ष्य 1 का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण। लिंग और विकास, 13(1), 13–24।

13 ब्रेनर, एस. (1996)। स्वयं और समाज का पुनर्निर्माण– जावानीस मुस्लिम महिलाएँ और 'घूंघट'। अमेरिकी नृवंशविज्ञानी, 23(4), 673–697।